A Pratibha Spandan Journal

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 14, Issue 01, January-June, 2026

देशाख रागिनी के चित्रों में मल्ल-युद्ध का चित्रण

Jaideep Hooda[1], Dr. Anjali Duhan[2]

1 Research Scholar in the Department of Visual Arts, Maharshi Dayanand University, Rohtak
2 Asociate Professor, Department of Visual Arts, Maharshi Dayanand University, Rohtak

Read the Article Online

OPEN ACCESS

Cite this Article

Published on 30 April, 2026

Hooda, J. and Duhan, A. (2026). Deshakh Ragini Ke Chitron Mein Mall-Yuddh Ka Chitran. Swar Sindhu, 14(1), 58-.61

सारांश

मल्ल-युद्ध को भारत का ही नहीं बल्कि पूरे विश्व का सबसे पुराना खेल कहा जाए तो गलत नहीं होगा। मनुष्य शरीर क्षमता बढ़ाने के लिए एक दूसरे के साथ मल्ल-युद्ध करते थे। जिसमें गर्दन को खींचना, आपस में धक्का देना, हाथों को बलपूर्वक पकड़ना शामिल था। आमतौर पर शिकार करते समय या कबीलों के सरदार बनते समय शारीरिक ताकत की जरूरत होती थी। मानव सभ्यता के साथ विकसित होने वाला सबसे प्राचीन खेल है, जिसका आधुनिक रूप कुश्ती है। इसके मूल की पहचान आर्यवर्त (प्राचीन भारत) में होती है। भारतीय लघु चित्रकला विशेषकर 18वीं शताब्दी में जयपुर 'रागमाला' श्रृंखला के माध्यम से 'मल्ल' और 'मल्ल-युद्ध' के चित्रण का गहन विश्लेषण करता है। 'रागमाला' चित्रकला में केवल संगीत की ध्वनियों को दृश्य रूप प्रदान करती है, बल्कि यह तत्कालीन समाज के सांस्कृतिक और शारीरिक आदर्श का सशक्त दस्तावेज भी है। अध्ययन का मुख्य केंद्र 'हिंडोला राग' की पत्नी 'देशाख रागिनी' के वह चित्र है जिनमें वीर रस और शारीरिक अनुशासन को प्रमुखता से दर्शाया गया है। शोध के अंतर्गत आर्ट इंस्टीट्यूट ऑफ शिकागो (1962.147.16) और ज्यूरिख (RVI 823) के संग्रह में सुरक्षित जयपुर शैली के दो चित्रों का तकनीकी अध्ययन किया गया है। विश्लेषण के दौरान यह पाया गया कि इन चित्रों में कलाकारों ने न केवल 'मल्ल-युद्ध' के विभिन्न दांव-पेंचों को उकेरा है बल्कि 'मल्लखंब','पत्थर उठाने जैसे प्राचीन व्यायाम उपकरणों को भी अत्यंत सटीकता से के साथ चित्रित किया है। कला के तत्वों जैसे- रेखाएं, प्रतीकात्मक रंगों (विशेषकर लाल और सुनहरे का प्रयोग) और द्वि-आयामी संरचनात्मक विन्यास के माध्यम से पहलवानों की शारीरिक सौष्ठव और गत्यात्मकता को उभारा गया है। देशाख रागिनी के यह चित्र केवल संगीत के दृश्य रूपांतरण मात्रा नहीं है, बल्कि यह 18वीं शताब्दी में जयपुर दरबार में प्रचलित 'मल्ल-विद्या' और शारीरिक प्रशिक्षण प्रणालीयों के महत्वपूर्ण ऐतिहासिक व कलात्मक साक्ष्य प्रस्तुत करते हैं। यह अध्ययन भारतीय चित्रकला के इतिहास में खेल संस्कृति और युद्ध कलाओं के अंतर्गत अंतरसंबंधों को समझने की एक नई दृष्टि प्रदान करता है।

बीजशब्द *- मल्ल-युद्ध, रागमाला चित्रकला, देशाख रागिनी,लघु चित्रकला, जयपुर शैली, राजस्थानी चित्रकला*

रागों के चित्रात्मक रूप

भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का वर्गीकरण कोई आधुनिक समय की उपलब्धि नहीं, बल्कि इसकी परंपरा बहुत प्राचीन है। इस परंपरा की जड़ें मध्यकाल तक जाती हैं और इसका प्रमाण हमें रागमाला के चित्रों के रूप में प्राप्त होता है। राग माला चित्रकला भारतीय लघु चित्रों की एक महत्वपूर्ण शैली है। जिसमें संगीत के रागों को दृश्य के रूप में बनाया गया है। इस प्रकार यह कला संगीत, चित्रकला और काव्य - तीनों का सुंदर सामान्य प्रस्तुत करती है।

रागमाला

'रागमाला' शब्द का शाब्दिक अर्थ है रागों की माला। यहां 'राग' केवल संगीत की धुन या फिर स्वर संयोजन नहीं है, बल्कि उन रंगों, भावनाओं और मनोभावों को भी व्यक्त करता है जो किसी विशेष संगीत को सुनते समय मन में उत्पन्न होते हैं। इस प्रकार रागमाला चित्रों में संगीत की अमृत वाणियों को दृश्य रूप देकर उन्हें मानवीय अनुभव से जोड़ा जाता है। रागमाला परंपरा का संबंध प्राचीन शास्त्रीय संगीत ग्रंथ *'नारद शिक्षा'* से भी जोड़ा जाता है। इस ग्रंथ में ध्वनि और भावनाओं के बीच के संबंध का विश्लेषण किया गया है। यही विचार आगे चलकर रागमाला चित्रकला के विकास का आधार बना।

रागमाला चित्रकला का ऐतिहासिक विकास

16वीं से 19वीं शताब्दी के बीच रागमाला चित्रकला भारत के विभिन्न दरबारों में अत्यंत लोकप्रिय हो गई थी। विशेष रूप से राजस्थान, मध्य भारत, गंगा-जमुना के मैदान और पहाड़ी क्षेत्रों में इस शैली का बहुत विकास हुआ था। इन क्षेत्रों के शासकों ने कलाकारों और संगीतज्ञ को संरक्षण प्रदान किया। जिसके कारण रागमाला चित्रों की अनेक श्रृंखलाएं बनी थी। इन चित्रों में कलाकारों ने रागों को मानवीय रूप देकर उन्हें किसी विशेष स्थिति,भाव या कथा से जोड़ा। इस प्रकार संगीत की अमूर्तता को चित्रों के माध्यम से समझना और अनुभवआत्मक बनाया गया।

रागों का वर्गीकरण

भारतीय शारीरिक संगीत परंपरा में रागों को वर्गीकृत करने के अनेक तरीके विकसित हुए। परंपरागत रूप से प्रत्येक राग को किसी ने किसी देवता से जोड़ा जाता था। इसके साथ ही यह भी निर्धारित किया जाता था कि उसे दिन के किस समय या किस ऋतु में गया जाना चाहिए। समय के साथ रागों की संख्या बढ़ती गई और उन्हें वर्गीकृत करने के नए तरीके सामने आए। इनमें सबसे लोकप्रिय पद्धति राग-परिवार प्रणाली थी। इस प्रणाली के अनुसार प्रत्येक प्रमुख राग को परिवार का मुखिया माना, जिसकी पत्नियाँ रागनियाँ, पुत्र रागपुत्र और पुत्रियाँ रागपुत्रियाँ कहलाती थी।

संगीत परंपरा में यह विश्वास भी प्रचलित था कि यदि किसी राग को अनुचित समय पर गया जाए तो वह केवल सौंदर्य की दृष्टि से ही अनुचित नहीं होगा, बल्कि उसे असगुन भी माना जा सकता था। ऐसा इसलिए भी था क्योंकि रागों को देवताओं से जोड़ा जाता था और यह विश्वास किया जाता था कि वे प्रकृति तथा वातावरण को भी प्रभावित कर सकते हैं।

रागमाला चित्रों की विषय वस्तु

'रागमाला' चित्रों में संगीत और काव्य की भावनाओं को मानवीय परिस्थितियों के माध्यम से व्यक्त किया गया है। प्रत्येक चित्र किसी न किसी नाटकीय स्थिति को प्रस्तुत करता है। फिर भी अधिक 'रागमाला' चित्रों का मुख्य विषय प्रेम होता है। इन चित्रों में प्रेम, भक्ति, उत्साह, मिलन, विरह, उत्सव और आनंद जैसी भावनाओं को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से चित्रित किया गया है। इस कारण रागमाला चित्रों को देखने से दर्शक के मन में भी वही भाव उत्पन्न होता है जो संबंधित राग की भावनाओं से जुड़े होते हैं।

छह प्रमुख राग

रागमाला परंपरा में सामान्यतः 6 प्रमुख रागों का उल्लेख मिलता है। इन रागों का संबंध देवताओं, ऋतुओं और दोनों के अलग-अलग समय से माना जाता है। यह प्रमुख छह राग हैं-

- राग भैरव
- राग मालकौंस
- राग हिंडोल
- राग दीपक
- राग श्री
- राग मेघ

मुख्य रागों से संबंधित अनेक रागिनियाँ, रागपुत्र और रागपुत्रियाँ चित्रित की जाती थी, जिससे एक विस्तृत रागमाला श्रृंखला का निर्माण हो गया।

देशाख रागिनी की अवधारणा

रागमाला चित्र में केवल भाव्यात्मक अवस्थाओं को ही नहीं, बल्कि दिन के विभिन्न समयों का भी संकेत मिलता है; उदाहरण के लिए हिंडोला राग जो प्रातःकालीन वातावरण को दर्शाने के लिए भी चित्रित किया जाता है। इसी परंपरा के अंतर्गत देशाख रागिनी भारतीय रागमाला चित्रकला की एक महत्वपूर्ण रागनी मानी जाती है, जिसे परंपरागत रूप से 'हिंडोला राग' की 'पत्नी' के रूप में स्वीकार किया जाता है। भारतीय लघु चित्रकला में 'देशाख रागिनी' के चित्र विशेष रूप से 17वीं और 18वीं शताब्दी में राजस्थान तथा मध्य भारत के राज दरबारों में निर्मित रागमाला के चित्रों में प्राप्त होते हैं। इन चित्रों में सामान्यतः उत्सव, खेलकूद, शारीरिक, कौशल तथा नृत्य से संबंधित दृश्य को चित्रित किया गया है। अनेक उदाहरणों में कलाकारों ने मानव आकृतियों को व्यायाम, कुश्ती, कलाबाजी, मल्लखंब करते हुए दर्शाया है। जिससे उसे समय की सामाजिक जीवन मनोरंजन और शारीरिक संस्कृति की स्पष्ट झलक देखने को मिलती है।

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 14, Issue 01, January-June, 2026

देशाख रागिनी के चित्रों की एक विशेष विशेषता यह भी है। कि उन्हें सामूहिक क्रीड़ा और शारीरिक अभ्यास से जुड़े गतिशील दृश्य दिखाई देते हैं। जिनमें पुरुषों को समूह में कुश्ती लड़ते हुए व्यायाम करते हुए या कलाबाजी आदि का प्रदर्शन करते हुए दिखाया गया है। इन दृश्यों से चित्रों में उत्साह, ऊर्जा और वीरता का वातावरण देखने को मिलता है। इन चित्रों में दर्शकों संगीतकारों अथवा दरबारी परिवेश को भी सम्मिलित किया गया है। जिससे उसे समय के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन का जीवन चरित्र सामने आता है। रंगों की सज्जा, स्थापत्य, पृष्ठभूमि तथा वस्त्राभूषणों की शैली राजस्थानी लघु चित्रकला और विशिष्ट विशेषताओं को अभिव्यक्त करती है। देशाख रागनी के चित्र मुख्यतः बूंदी, कोटा और मेवाड़ स्कूल की पेंटिंग जैसी राजस्थानी लघु चित्र परंपराओं में अधिक देखने को मिलते हैं। इन शैलियों के कलाकारों ने देशाख रागनी को केवल एक संगीतात्मक अवधारणा के रूप में नहीं, बल्कि उन्हें शारीरिक शक्ति, उत्साह, सामूहिक कीड़ा और शारीरिक संस्कृति के प्रतीक के रूप में भी प्रस्तुत किया है। इस प्रकार देशाख रागनी से संबंधित चित्र भारतीय कला इतिहास में विशेष महत्व रखते हैं। क्योंकि यह भारतीय संगीत और चित्रकला के परस्पर संबंध को स्पष्ट करने के साथ-साथ उसे समय के समाज में प्रचलित खेलकूद, व्यायाम तथा मनोरंजन के परंपराओं को भी सजीव रूप से अभिव्यक्त करते हैं।

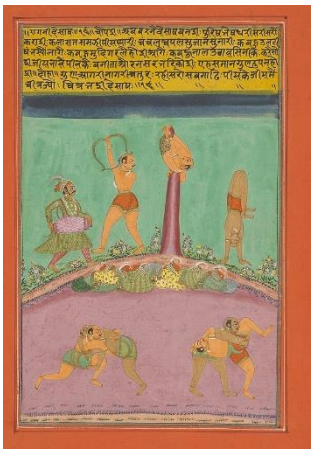

जयपुर रागमाला श्रृंखला का यह चित्र, जिसे देसाख रागिनी ' (Ragini Desakh) के एक पृष्ठ के रूप में जाना जाता है,18वीं शताब्दी के मध्य (लगभग 1745 से 1770 ईस्वी) की राजस्थानी लघुचित्र कला का एक बेजोड़ उदाहरण है। जयपुर शैली में निर्मित यह कृति वर्तमान में 'आर्ट इंस्टीट्यूट आफ शिकागो' के संग्रह में सुरक्षित है। कागज पर अपारदर्शी जलरंगों और सोने के सूक्ष्म प्रयोग से बनी यह पेंटिंग न केवल संगीत की एक रागिनी के दृश्य रूप प्रदान करती है, बल्कि तत्कालीन जयपुर दरबार की संस्कृति को कलात्मक गौरव को भी प्रस्तुत करती है। रागमाला परंपरा के तहत बनाया गया यह वीर रस और ऊर्जा का संचार करता है, यहां शारीरिक गतिविधि और संगीत का अद्भुत संबंध दिखाई देता है।

चित्र की संरचना को तीन मुख्य क्षितिज स्तरों पर विभाजित किया गया है। जो दृश्य को एक व्यवस्थित कर्म और कथा प्रवाह पैदा करते हैं। सबसे ऊपरी भाग में गहरे नीले रंग की एक पट्टी आकाश को दर्शाती है। मुख्य भाग में एक विस्तृत हर मैदान का चित्रण है, जिसके केंद्र में एक ऊंचा 'मल्लखंब' स्थित है। इस 'मल्लखंब' पर एक साधक अत्यंत कठिन मुद्रा में संतुलन बनाए हुए हैं। जो उसे समय की शारीरिक कलाबाजी और शारीरिक अनुशासन के बारे में बताता है, कि लोग स्वस्थ रहने के लिए विभिन्न तरह की शारीरिक गतिविधियां करते थे। चित्र में बाई तरफ एक संगीतकार मृदंग बजाकर माहौल को ऊर्जावान कर रहा है, कि जैसे संगीत इन पहलवानों में ऊर्जा भर रहा हो और पहलवान ढोलक की थाप सुनने पर ताकत लगा रहे हो। जबकि दाएं और अन्य पुरुष हाथों के बल खड़े होकर अपनी शक्ति का प्रदर्शन कर रहा है व कलाबाजियां दिखा रहा है। चित्र के सबसे निचले हिस्से में एक अर्ध वृताकार बैंगनी-गुलाबी अखाड़ा दिखाया गया है, जहां पहलवानों की दो जोड़ियां कुश्ती कर रहे हैं। पहलवानों का शरीर गठीला व शक्तिशाली बनाया गया है। अखाड़े के बाहर पहलवानों के कपड़ों को दिखाया गया है। मुख्य रूप से देशाख रागिनी में इस चित्र को कई बार बनाया गया है। तथा साथ ही साथ पूरे चित्र के कंपोजिशन को देखकर यह लग रहा है, कि यह चित्र अवश्य ही किसी मेले का चित्र होगा।

कला के तत्वों की दृष्टि से यह पेंटिंग अत्यंत समृद्ध है। चित्रकार ने रेखाओं का प्रयोग इतनी सूक्ष्मता से किया है, कि पात्रों की मांसपेशियों का उभार और उनकी गत्यात्मक मुद्राएं स्पष्ट रूप से उभर कर आती है। मल्लखंब की खाड़ी रेखाओं और पहलवानों की कोणीय शारीरिक भंगिमाएँ दर्श्य में तनाव और शक्ति का बोध कराती हैं। रंगों का चयन जयपुर शैली की विशेषता को दर्शाता है, जहां हरे मैदान और गुलाबी अखाड़े के बीच का विरोधाभास गहराई पैदा करता है। सुनहरे रंग का प्रयोग आभूषणों में चमक लाने के लिए किया गया है। जबकि गहरा लाल हाशिया पूरी कृति को एक गरिमापूर्ण घेरा प्रदान करता है। हालांकि 'रूप' यहां पारंपरिक लघुचित्रों की तरह द्वि-आयामी है। लेकिन पत्रों की मुद्राओं के माध्यम से उनके शरीर के भार और आयतन का सटीक आभास होता है। साथ ही, 'सपाट परिप्रेक्ष्य' के उपयोग से स्थान का प्रबंधन इस तरह किया गया है कि दर्शक की दृष्टि एक व्यवस्थित क्रम से पूरे चित्र पर भ्रमण करती हैं।

चित्र के संयोजन में कला के सिद्धांतों का कुशलता पूर्वक निर्वाह किया गया है। इसमें 'असममित संतुलन' का सुंदर उदाहरण मिलता है, जहां केंद्र में स्थित मल्लखंब एक धुरी की तरह कार्य करता है और इसके दोनों ओर की गतिविधियां दृश्य को संतुलित करती हैं। पूरे चित्र में एक 'लय और गति' विद्यमान है। संगीतकार की थाप से शुरू होकर दर्शन की दृष्टि मल्लखंब के साधक से होती हुई नीचे कुश्ती लड़ते पहलवानों तक एक प्रवाह में

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 14, Issue 01, January-June, 2026

चलती है। इस रचना का मुख्य केंद्र बिंदु मल्लखंब और मल्ल-युद्ध के दृश्य हैं, जो सीधे तौर पर देसाख रागिनी के साहसी और स्फूर्तिदायक स्वभाव को परिभाषित करते हैं। अतः रंगों की पुनरावृत्ति और शैलीगत एकरूपता चित्र में 'एकता और सामंजस्य' स्थापित करती है। इसमें संगीत व्यायाम और युद्ध कला एक ही धरातल पर एकीकृत होकर भारतीय संस्कृति के एक महत्वपूर्ण अध्याय को उजागर करते हैं।

एक और 'रागिनी देसाख' का चित्र जो रिएटबर्ग संग्रहालय में है। 18वीं शताब्दी के जयपुर की यह पेंटिंग(इन्वेंटरी नंबर RVI 823) 'रागिनी देसाख' की परंपरा को आगे बढ़ाती है। नवंबर 1975 में 'ज्यूरिख के स्पिंक एंड सन' के अधिग्रहित यह पेंटिंग कागज पर रंजक रंगो से बनी है और अपनी लाल पृष्ठभूमि की वजह से कहीं ज्यादा 'ऊर्जावान' और 'उग्र' नजर आती है। रागमाला के सिद्धांत के हिसाब से देखें तो यहां लाल रंग किसी एक बैकग्राउंड का नहीं,बल्कि यह उसे जोश और गर्मी का प्रतीक है,जो एक पहलवान भीतर व्यायाम और युद्ध के दौरान पैदा होता है।

इस पेंटिंग की बनावट को समझने के लिए हम इसके भी तीन तीन-स्तरीय विभाजन को देखना होगा। सबसे पहले पीली पट्टी पर देवनागरी लिपि से जानकारी लिखी है। बीच के बड़े हिस्से में गहरा लाल रंग हावी है। इसके केंद्र में वही गुलाबी रंग का एक खंभा मल्लखंब खड़ा है। जिस पर एक साधक बड़ी एकाग्रता से संतुलन संतुलन बनाए हुए हैं। मल्लखंब की बाई और एक संगीतकार मर्दंग बजाकर माहौल को लयबंद कर रहा है।जब कि संगीतकार के पास खड़ा एक पहलवान जो धनुष के आकार के किसी यंत्र से व्यायाम कर रहा है तथा दाईं और खड़ा एक अन्य पहलवान अपने सिर से ऊपर तक किसी व्यायाम के यंत्र को उठाए हुए हैं,जो गुलाबी रंग से बना हुआ है। चित्र के नीचे भाग में एक गुलाबी-बैंगनी अखाड़ा बनाया हुआ है, जिसमें पहलवानों को कुश्ती करते हुए दिखा रखा है। यह पहलवान एक दूसरे की टांगों में टांगे फंसा कर तथा कमर से पड़कर एक दूसरे को गिराने की कोशिश कर रहे हैं।

अगर कला के तत्वों की बात करें तो यहां रेखाओं का कमाल साफ दिखता है। कलाकारों ने पहलवानों के शरीर की संरचना को दिखाने के लिए गहरी और स्पष्ट आउटलाइन का इस्तेमाल किया है। जिससे उनकी शारीरिक शक्ति साफ झलकती है। 'रंगों' की बात की जाए तो लाल और गुलाबी का मेल इस पेंटिंग को बहुत गर्म(Warm) एहसास देता है। जो कुश्ती करने के माहौल को जीवित और ऊर्जा से भर देता है। 'आकार' के स्तर पर देखें तो नीचे का गुलाबी अर्थ वार्ताकार हिस्सा अखाड़े का 'स्थान' जो बखूबी परिभाषित करता है।

कला के सिद्धांतों के नजरिया से इस चित्र में अच्छा 'संतुलन' बनाया हुआ है। मल्लखंब को केंद्र में रखकर बाकी गतिविधियों को दोनों तरफ इस तरह सजाया गया है, कि दृश्य को पूरी तरह संतुलित किया जा सके। पूरे चित्र में लय महसूस होती है जैसे मृदंग की थाप पर ही यह सब कसरत कर रहे हो। 'बल' पूरी तरह से शारीरिक अनुशासन और शौर्य पर दिया गया है। जो देसाख रागिनी की मूल आत्मा है।

संदर्भग्रंथ सूची

Accessed on March 18,2026 https://www.artic.edu/artworks/129870/ragini-desakh- page-from-a-jaipur-ragamala-set.

Accessed on March 18,2026 https://rietberg.ch/en/collections/rvi-823.

Kumar, Suresh. CONSTRUCTION AND STANDARDIZATION OF FREE STYLE WRESTLING SKILL TEST Ph.D. Thesis, Department of Physical Education, Lovely Professional University, Phagwara ,2022.)

Sharma, Heena . ANALYTICAL STUDY OF RAGAMALA (Ph.D. Thesis, Department of Fine Arts, Desh Bhagat University, Mandi Gobindgarh , Punjab.)

Sharma, Nirmala. "A CRITICAL STUDY OF RAGAMALA PAINTINGS OF GUJARAT RAJASTHAN AND CENTRAL"(Ph.D. Thesis , Department of History, Gujarat University, Gujarat.)

Suhag, Naveen Singh. TRENDS IN INDIAN AND RUSSIAN WRESTLING : A COMPARATIVE STUDY (Ph.D. Thesis, Department of Physical Education, MaharshiDayanandUniversity,Rohtak,2017.)

दलाल, तेजपाल. "भारत में कुश्ती कला का उद्भव एवं विकास",हरियाणा: आर्यन खेलप्रकाशन,2007